RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 11 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 21 अगस्त 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

जुगाड़ की पटरी पर...

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

स्वतंत्रता के वर्षों बीत जाने के बाद भी देश में जुगाड़ की पटरी पर चलने की मजबूरी है। सीमान्त क्षेत्र मुनस्यारी के उखडिया तोक के गर्जिया में एक पुल का चित्र यहाँ पर दिया जा रहा है। लोनिवि ने पिछले साल डेढ़ लाख से इसे पुनर्निर्माण कराया था। मल्ला जोहार विकास समिति का आरोप है कि ठेकेदार द्वारा सड़े-गले तख्ते डालकर पुल बनाया गया जिससे दुर्घटना की का भय है। इस पर किसी प्रकार की दुर्घटना होती है तो जिम्मेदारी किसकी होगी। समय रहते इसे और इसके जैसे अन्य पुलों को दुरुस्त किया जाए।

बागेश्वर उपचुनाव

भाजपा-कांग्रेस के दिग्गजों ने डेरा डाल लिया

कार्यालय प्रतिनिधि

बागेश्वर। अनुसूचित जाति आरक्षित बागेश्वर विधानसभा क्षेत्र बागेश्वर के उपचुनाव में भाजपा-कांग्रेस के दिग्गजों ने डेरा डाल दिया है। इस चुनाव के माध्यम से दोनों पार्टियां लोकसभा चुनाव के लिये अपना सन्देश देना चाहती हैं। काफी उधेड़बुन के बाद भाजपा ने पूर्व कैबिनेट मंत्री स्व.चन्दनराम की पत्नी पार्वती दास को और कांग्रेस ने आप छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए बसन्त कुमार को अपना प्रत्याशी बनाया। इस चुनाव में भाजपा ने लगातार स्व.चन्दनराम के जीत रिकार्ड और सहानुभूति को समेटने के लिये श्रीमती पार्वती को आगे किया। कांग्रेस ने पिछले चुनाव के दमदार आप प्रत्याशी बसन्त कुमार को अपने साथ मिलाकर इस विधानसभा सीट को चाहा है।

इस उपचुनाव में भाजपा-कांग्रेस के सारे दिग्गज इसलिये भी बागेश्वर पहुंच रहे हैं क्योंकि इस चुनाव की रणनीति से साफ पता चल रहा है कि आने वाले निकाय और लोकसभा चुनाव में कैसी रणनीति बनने जा रही है। एक-दूसरे को चुनाव मैदान में ढेर करने के लिये छुटभैय्यों तक को डोरे डाले जा रहे हैं।

चम्पावत उपचुनाव का फार्मूला अपना रही है भाजपा

बागेश्वर उपचुनाव के लिये भारतीय जनता पार्टी की रणनीति से साफ दिख रहा है कि जो फार्मूला उसने चम्पावत उपचुनाव में लागू किया था उसे ही यहाँ पर किया जा रहा है। याने की कांग्रेस को पूरी तरह घेर लिया जाए। इसके (शेष पृष्ठ 3 पर)

188 बूथों पर होगा मतदान

बागेश्वर उपचुनाव में 188 बूथों पर एक लाख 18 हजार 225 मतदाता मतदान करेंगे। जिला निर्वाचन अधिकारी अनुराधा पाल ने बताया है कि मतदाताओं में 60 हजार पुरुष और 58 हजार 272 महिला मतदाता पंजीकृत हैं। चुनाव के लिये 25 सम्वेदनशील और अति सम्वेदनशील मतदान केन्द्र चिह्नित किये गये हैं। मानसून काल देखते हुए प्रशासन ने अपनी ओर से पूरी तैयारी कर रखी है।

उपलब्धियों से भरा रिकॉर्ड है मुनस्यारी इण्टर कालेज का लेकिन आजकल बेहाल

बृजवाल परिवारों की चार सौ नाली भूमि इस संस्था को बनाने में लगी है

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

मुनस्यारी। क्षेत्र का इण्टर कालेज अपने भवन निर्माण, योग्य शिक्षकों का आशीर्वाद और योग्य शिष्यों की सूची के रिकॉर्ड से भरा पड़ा है। अपनी तमाम उपलब्धियों के बावजूद इसका वर्तमान बेहाल होने को है, इस दिशा में मल्ला जोहार विकास समिति ने चिन्ता जताई है। समिति का कहना है कि उल्लेखनीय कालेज की सुनहरी यादों को बनाए रखने के लिये स्थानीय लोगों के साथ ही शासन-प्रशासन ने भी ध्यान देना होगा। विद्यालय का जो शानदार भवन दिखाई देता है इसके लिये स्थानीय बृजवाल परिवारों की 400 नाली से ऊपर भूमि दान स्वरूप दी थी। इसे दानधार नाम से जाना जाता है। उक्त भूमि में 1960 में राजकीय इण्टर कालेज की स्वीकृति मिली और भवन का निर्माण किया गया, जो स्थानीय पत्थरो से बनाई गई है। इस स्कूल के संचालक श्री विपिन चन्द्र जोशी जी प्रधानाचार्य रहे। उनके नेतृत्व में स्कूल ने अनेक नेक कार्य किये और एक उच्च शिखर तक पहुँचाया, जिसका नाम पूरे उत्तर प्रदेश के अलावा अन्य राज्यों में भी हुआ। यह एक आदर्श स्कूल के नाम से जाना जाता था। अनेक विद्यार्थियों ने इस स्कूल में अध्ययन करते हुए उच्च पदों पर ख्याति प्राप्त की है। जैसे आईए एस, आईपीएस, आईएफएस, आर्मी, पैरा मिलिट्री, एयर फोर्स, पुलिस विभाग के अलावा अन्य उच्च पदों पर देश की सेवा में सम्मिलित हुए। जो आज भी सेवा निवृति के बाद भी कार्यरत है। कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में इस स्कूल का नाम शहीद स्वतंत्रता सेनानी स्व.त्रिलोक सिंह पांगती जी के नाम से संचालित है।

मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू कहते हैं कि इस स्कूल अपनत्व की भावना को रखते हुए जिन गुरुजनों ने सींचा उनका बेहद सम्मान समाज करता है। आदरणीय स्व. विपिन चन्दर जोशी के नेतृत्व में स्कूल संचालन में अनुशासन, रखरखाव, अध्ययन कार्य, खेलकूद, शिक्षकों की नियुक्ति सबकुछ दिखाई देता था परन्तु समय के साथ अब दिशाहीनता दिखाई दे रही है। यह दुरुभाग्य ही है वर्तमान में प्रधानाचार्य और कई विषय अध्यापकों की नियुक्ति नहीं हुई है। ऐसे में बच्चों की पढ़ाई लिखाई अनुशासन का जो स्तर होना चाहिए वह नही है। स्कूल को अनेक कठिनाइयों के साथ संचालित किया जा रहा है।

समिति ने आयुक्त को पत्र भेजकर अनुरोध किया है कि कभी कभार मुनस्यारी आकर इस विद्यालय की दिशा देखने का अनुरोध किया है। कहा है कि स्कूल बिल्डिंग की मरमत का कार्य अभी कुछ समय पूर्व किया गया था, करोड़ो रुपये खर्च करने के उपरान्त भी सन्तोषजनक कार्य नहीं हुआ है। खेल मैदान में हैलीपैड निर्माण कर दिया गया है, जिससे भी अध्ययन में दिक्कत होती है।

मौसम हर साल कई मुसीबतें और चुनौतियां लेकर आता है

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड के लिए मानसून का मौसम हर साल कई मुसीबतें और चुनौतियां लेकर आता है। इस बार हो रही बारिश कुमाऊं और गढ़वाल दोनों ही क्षेत्रों के लिए किसी श्राप से कम साबित नहीं हो रही है। प्रदेश में हर तरफ से सिर्फ तबाही और जलप्रलय की ही तस्वीरें सामने आ रही हैं। पहाड़ों से भूस्खलन और पहाड़ी मलबा गिरने की खबरें आ रही हैं। मैदानी इलाकों में जलभराव और बाढ़ की तस्वीरें सामने आ रही हैं। मैदानी इलाकों में सबसे ज्यादा अगर नुकसान कहीं हो रहा है तो वो हरिद्वार है। जहां जलप्रलय और बाढ़ जैसे हालात हैं। लेकिन इसके लिए क्या सिर्फ प्रकृति की जिम्मेदारी है या फिर मानव द्वारा पहाड़ों पर हो रहा अंधाधुंध, अव्यवस्थित विकास और बिना मानकों के पहाड़ों पर घर बनाना, पहाड़ की क्षमता से अधिक होटलों की बड़ी-बड़ी बिल्डिंग बनाना, नदियों के किनारे घर बनाना या फिर अव्यवस्थित ड्रेनेज सिस्टम ही क्यों न हो। जिस तरह से उत्तराखण्ड के पहाड़ों में रेलवे टनल के निर्माण के लिए तय क्षमता से अधिक मात्रा में ब्लास्ट करने के लिए विस्फोटकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। उससे ये पहाड़ और कमजोर हो गए हैं। इतना ही नहीं इसी साल जोशीमठ में भी भू-धंसाव और घरों में दरारें आने की घटना हुई है। अभी भी जोशीमठ में स्थिति सामान्य नहीं है। भारी बारिश के कारण जहां अलकनन्दा नदी का जलस्तर बढ़ गया हैए जिससे एक बार फिर पहाड़ के कटाव का खतरा बढ़ गया है। वहीं पिथौरागढ़ में भी भारी बारिश से पहाड़ टूटकर गिर रहे हैं। अल्मोड़ा जिले से पहाड़ों के गिरने की खबरें आ रही हैं। प्रदेश में चारधाम यात्रा

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

उत्तराखण्ड में सशक्त भू-कानून बने तभी लगाम लगेगी

उत्तराखण्ड में सशक्त भू-कानून को लेकर जनता जाग चुकी है। जन आवाज को देख सरकार की ओर से भी संकेत दिया जा रहा है कि प्रदेश में सशक्त भू-कानून लागू होगा ताकि उत्तराखण्ड के जल-जंगल-जमीन सुरक्षित रह सकें। वर्तमान में जिस प्रकार की अराजकता प्रदेश में मची हुई है वह मुंह चिढ़ाने वाली है। जिसका मन करे उत्तराखण्ड में भूमि हथिया कर पहला काम अपना आधार कार्ड बनवा ले। बस फिर क्या मकान-पानी बिजली बिल, आधार कार्ड.....करते रहो जो करना है। पहाड़ की माटी में जितना बबंडर मचने लगा है उसके लिये यहां के कतिपय लोग भी जिम्मेदार हैं जो अपने लालच के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। ऊपर से राजनीतिक संरक्षण ने इन्हें हवा दी है। इन सारे हालातों का परिणाम आने लगा है। यही कारण है कि जनता सड़क पर उतर चुकी है।

उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलनकारी मंच के आह्वान पर विभिन्न संगठनों ने देहरादून में जबर्दस्त प्रदर्शन किया। सीएम आवास तक कूच करने वाले प्रदर्शनकारियों ने कहा कि प्रदेश को बचाने के लिये यह जरूरी है। हिमाचल की तर्ज पर सख्त भू कानून जरूरत हो बन गया है। आन्दोलन कारियों व पुलिस के बीच प्रदर्शन के दौरान झड़प भी हुई। जनता की आवाज पर सीएम ने कहा है कि उत्तराखण्ड में सशक्त भू-कानून को लेकर राज्य सरकार पूरी तरह तैयार और प्रतिबद्ध है। भू-कानून को लेकर गठित कमेटी की रिपोर्ट पूर्व में मिल चुकी है। जल्द ही इस सम्बन्ध में प्रस्ताव कैबिनेट बैठक में लाया जायेगा। सरकार के लिये जन भावनओं का सम्मान सर्वोपरि है और उसी अनुरूप सख्त भू-कानून बनाया जायेगा।

भू-कानून पर उत्तराखण्ड राजस्व परिषद के सचिव चन्द्रेश कुमार का कहना है- 'भू-कानून की सिफारिशों को कानून का रूप कैसे दिया जाए इसके लिए राजस्व परिषद के स्तर पर गठित समिति अध्ययन कर रही है। लम्बे समय बाद भू-कानून में बदलाव को लेकर कसरत शुरु हुई है, जिसे अगले कई दशकों को ध्यान में रखकर तैयार करना है। ऐसे में हर पहलू ध्यान में रखा जा रहा है ताकि भविष्य में कानूनी विवाद की स्थिति पैदा न हो।'

शासन-प्रशासन की तैयारी और जनता के उबाल के बाद यह तो तय है कि नया भू-कानून आना ही है लेकिन इसके लिये लम्बे समय से कैसी परेड हो रही है? सवाल है कि जब प्रदेश की जनता सड़कों पर उतरने को मजबूर हो चुकी है तो कुछ न कुछ बात तो अवश्य है। जगह-जगह भू-माफियाओं की हरकतों से त्रस्त लोगों के आन्दोलन भी सुलगे हुए हैं। पहाड़ की बात करने वाले पहाड़ी भू-माफिया भी इसमें कम नहीं हैं। पहाड़ का नमा जपकर गुमराह करने वालों सहित बाहर के सौदेबाजों से त्रस्त उत्तराखण्ड को न्याय मिले।

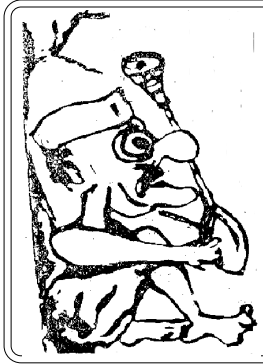

फसक

दाज्यू, गणत बदल जाने वाला ठैरा

चुनाव से पहले जगह-जगह खचोरा-खचोर हो रही है बल

दाज्यू, लोकसभा-निकाय चुनाव से पहले हमारे बिबाकर दा और घन दा कपड़े के जूते पहनकर चलने का अभ्यास कर रहे हैं। इन दोनों का कहना है- 'हमेशा नंगे पैर चले हैं, अब जाकर जूते का मजा आ रहा है। रभ्भड़ वाला चप्पल कभी कभार पहनने को मिल जाती थी। अब पार्टी वालों ने संगठन में स्थान दे दिया है।' दाज्यू, ग्रामीण इकाई से लेकर नगर इकाई तक का हर नेता खास होने वाला हुआ। किसी के बनते ही गणत बदल जाने वाला ठैरा। हल्द्वानी में नगर निगम का नया परिसीमन जारी होते ही चुनाव लड़ने वाले स्थानीय नेताओं का गणत बिगड़ रहा है बल। पत्तरफाड़ भी धमा-चौकड़ी मचाए हुए हैं। हल्द्वानी में महिला पर 5 हजार का इनाम घोषित हो चुका है। सिंचाई विभाग के अधिकारी का वीडियो और आडियो बनाकर ब्लैकमेल करने वाले तीन पत्रकार तो पहले ही सलाखों के पीछे हैं। पुलिस हत्थे न चढ़ने पर चौथी साथी महिला पर इनाम रख दिया गया है। टनकपुर शहर के विष्णुपुरी गली निवासी से विदेश भेजने के नाम पर 14 लाख की धोखाधड़ी हो गई बल। दाज्यू, समझ नहीं आ रहा है कि विदेश में नौकरी लगने के लालच में लाखों रुपया क्यों बैर किया जाता होगा?

दाज्यू, हमारी मुनिया पुरस्कार मिलने से बहुत खुश है। मोहल्ले वाले अब लक्ष्मीबाई करने लगे हैं। हमारी अपनी अकल काम नहीं कर रही है कि मुनिया ने क्या कर डाला कि उसे पुरस्कार मिल रहा है और लक्ष्मीबाई हो चुकी है। चलो, कोई बात नहीं, गणत का कमाल है। पहले से यमुना किनारे मोहम्मद फालिस को सरकार हर कमेटी में रख दिया करती थी। उस समय का वह गणत था। ये सरकारें भी ना.....। अब देखो जरा, रुद्रपुर में हत्या-लूट के पुराने मामले में भाजपा कार्यकर्ता समेत दो को उम्र कैद हुई है। कनालीछीना के थानाध्यक्ष अम्बी राम को निलम्बित करना पड़ा। दाज्यू, वह चालान करते समय बोल पड़े- 'हर महीने का एक ही चालान तो होता है, टकवाओ फिर।' दाज्यू, घोड़ा हो या गाड़ी पुलिस की भी लैन होने वाली ठैरी। बाजपुर में अवैध असलहा बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ी गई। यहाँ से यूपी, हरियाणा, दिल्ली में सप्लाई होती थी बल।

चुनाव से पहले जगह-जगह खचोरा खचोर हो रही है बल। बागश्वर में भी कौतिक मचा हुआ है। धुरमण्ड मचाने वाले घूमने लगे हैं बल। वोटर तो जिसको चाहे वोट दे ही देंगे लेकिन खचारने वालों का भी अपना रोजगार ठैरा। सारे नेता बागश्वर उमड़ रहे हैं। उसके बाद लोकसभा और निकाय चुनाव में भी जुटना होगा। चोर-चकार अपने गणत में लगे हैं। बैरती से मग्गू बता रहा था महाकालेश्वर के सरस्वती शिशु मन्दिर स्कूल में तोड़फोड़ हुई। अराजकतत्वों ने कम्प्यूटर व फर्नीचर तोड़ डाले। हल्द्वानी में आईजी ने बैंक और सुनारों की बैठक में शटर पर अलार्म सिस्टम लगाने को कहा। दाज्यू, सिस्टम तो बहुत ठैरे लेकिर गणत कब बिगड़ जाए पता नहीं। कलयुग में ज्योतिष का दावा करने वाले नेताओं तक को खचोर रहे हैं बल। बॅकिम के पितरों ने ज्योतिष का वास्ता देकर प्रदेश के मंत्रियों को घेरना शुरु कर दिया है बल। नीले-पीले पत्थर वाली अंगूठी बेचने वाले प्रोफेसर ने कागज के बहुत लिफाफे बनवाए थे। अब विधायक तिलकराज कह रहे हैं- 'पार्टी ने मुझे किच्छा तक ही सीमित कर दिया है।'

पंजाब के भाजपा नेता ने उत्तराखण्ड मुख्यमंत्री के पूर्व निजी सचिव समेत सात लोगों पर धोखाधड़ी का आरोप लगाया है। सरकारी टेंडर दिलाने के नाम पर पटियाला के कई भाजपा नेताओं को ठग लिया बल। दाज्यू, राजनीति की खेतीबाड़ी में यही सब गणत चलने वाला हुआ। जिसकी चल गई चलाते रहो। खुल्लम खुल्ला खेल ठैरा। खचोरा खचोर अपनी जगह है। सरकार मोटे अनाज की बात कह रही है और गब्बू चरसी आकाश को देखकर हंस रहा है। भगवान भली करे। -तुम्हारा भुली झकरुवा

मौसम हर साल....

प्रथम पृष्ठ का शेष

भी चल रही है जिसके कारण यहाँ आने वाले लोगों की संख्या बढ़ी हुई है। सभी लोग सुरक्षित रहें इसकी बड़ी चुनौती भी प्रदेश सरकार के सामने है। भारी बारिश के कारण गंगोत्री और यमुनोत्री हाईवे बन्द पड़ा हुआ है तो उधर बारिश और भूस्खलन के कारण केदारनाथ यात्रा को भी रोका गया है। बारिश के कारण बद्रीनाथ हाइवे बार-बार भूस्खलन होने से बन्द हो रहा है। साल 2013 में 16-17 जून को केदारनाथ धाम में चौराबाड़ी झील में बादल फटने से भारी मलबा और विशाल बोल्डर ने तबाही ला दी थी। शान्त केदार घाटी में अचानक मचे कोलाहल ने सबको चौंका दिया था। किसी ने सोचा नहीं था कि मन्दाकिनी नदी विकराल रूप लेकर इस कदर तबाही मचा देगी। इस हादसे में दस हजार से ज्यादा लोग मारे गए थे। केदारनाथ आपदा में 11091 से ज्यादा मवेशी बाढ़ में बहकर और मलबे में दबकर मर गए थे। 1309 हेक्टेयर भूमि तबाह हो गई। इस आपदा में 2141 भवन, 100 से ज्यादा बड़े और छोटे होटल, 9 नेशनल हाईवे, 2385 सड़कें, 86 मोटर पुलए 172 बड़े-छोटे पुल भी बुरी तरह तबाह हो गए। पर्यावरण विशेषज्ञों और जानकारों का मानना है कि केदारनाथ में साल 2013 में आई आपदा के दो कारण थे। आज भी जो स्थिति सामने है, उसके लिए भी यही दो कारण हैं। पहला मानसूनी हवा और दूसरा पश्चिमी विक्षोभ में होने वाला बदलाव। इन दोनों के चलते ही केदारनाथ में पानी से तबाही मची थी। यही दो कारण आज की आपदा के लिए जिम्मेदार हैं। इस आपदा का कारण तेज बारिशए बाढ़ और भूस्खलन को भी बताया जाता है। इस आपदा के पीछे मानवीय कारणों को भी दोषी ठहराया जाता है, पहाड़ों में जरूरत से ज्यादा निर्माण, बहुत अधिक संख्या में पर्यटकों की आवाजाही भी आपदा के कारण हैं। खनन, पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले पदार्थों की अधिकता से पारिस्थितिकी तंत्र को अधिक नुकसान हुआ है। जो अभी वर्तमान स्थिति का प्रमुख कारण है। 2013 की वो आपदा सरकार के लिए एक सबक थी। जिसके बाद दुबारा कभी ऐसी भयानक आपदा प्रदेश में न हो इसके लिए तमाम सरकारों ने कई योजनाएं बनाई। ऐसा नहीं है कि यहां जनता पर राज करने वाली दोनों ही सरकारों ने पहाड़ के विकास को कभी नजरअंदाज किया हो। अगर ऐसा होता तो आज उत्तराखण्ड में इतनी तेजी से विकास नहीं हो रहा होता। फिर चाहे वो विकास, ऑल वेदर रोड। जिसे अब चारधाम यात्रा मार्ग के नाम पर बदल दिया गया है, वो हो या फिर तेजी से नदियों के ऊपर ब्रिज बनाने का काम, ऋषिकेश से कर्णप्रयाग तक रेलवे लाइन बिछाने का काम हो या फिर बद्रीनाथ धाम के पुनर्निर्माण की योजना। इन सभी के लिए वर्तमान की केन्द्र और राज्य सरकार मिलकर काम कर रही है। पर्यटन को बढ़ाने के लिए भी सरकार लगातार काम कर रही है। केदारनाथ मन्दिर का जहां कायाकल्प हो रहा है तो बद्रीनाथ धाम के भी पुनर्निर्माण व कायाकल्प का काम चल रहा है। साथ ही ऋषिकेश में जल्द ही पर्यटकों को ग्लास ब्रिज की सौगात मिलने वाली है। हरिद्वार में हरि की पैडी में भी कॉरिडोर बनाने की योजना पर काम किया जा रहा है। दरअसलए हम आज ये बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आज एक बार फिर 2013 की ही स्थिति प्रदेश में देखने को मिल रही है। खासतौर पर गढ़वाल मण्डल में। अगर हम कुमाऊं की बात करें तो वहां जो पहाड़ हैं वो पत्थर के हैं। जिसे राक माउंटेन कहते हैं, जो काफी मजबूत होते हैं। यही कारण है कि कुमाऊं क्षेत्र में गढ़वाल मण्डल की तुलना में बारिश के मौसम में कुछ कम नुकसान हुआ है। जबकि भारी बारिश में गढ़वाल क्षेत्र में सबसे ज्यादा बाढ़, पहाड़ों का गिरना, भूस्खलन जैसी घटनाएं काफी घटती हैं। क्योंकि यहां के पहाड़ भूरभूरी रेत के हैं। जो बहुत कमजोर होते हैं। पर्यावरणविद् ने कहा कि चार धाम जाने के लिए सड़कें चौड़ी कर दी गई हैं। वहाँ हजारों गाड़ियां पहुँच रही हैं जिससे हालात बिगड़ रहे हैं। गाड़ियां खड़ी करने के लिए पार्किंग तक नहीं हैं। इस वजह से सड़कों पर जाम लगा रहता है। इसके अलावा पहाड़ों पर वीकेंड टूरिज्म को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे हिमालय की इकोलाजी को नुकसान पहुँच रहा है। दूसरा इसके बदले स्थानीय लोगों को कोई फायदा भी नहीं मिल रहा। कुछ गिने-चुने लोगों की लाबी न केवल कमाई कर रही है बल्कि जब पर्यटकों की संख्या सीमित करने की बात होती है तो प्रशासन पर दबाव बनाकर इसका विरोध करती है। प्रशासन का कहना है कि प्रदेश में आपदा की स्थिति है।

हम लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। साथ ही किसी भी आपदा की स्थिति से निपटने के लिए एनडीआरएफए एसडीआरएफए आपदा प्रबन्धन विभाग, आपदा कन्ट्रोल रूमए पुलिस, स्वास्थ्य विभाग आदि सभी को अलर्ट पर रहने के आदेश जारी कर दिए गए हैं। सभी डीएम एसडीएम को अपने क्षेत्र में मॉनिटरिंग करने के आदेश जारी कर दिए गए हैं। मुख्यमंत्री धामी ने भी चारधाम यात्रा में आ रहे यात्रियों से अपील की है कि वो मौसम को देखते हुए यात्रा के लिए आएं। लेकिन सवाल क्या इसी तरह का विकास पहाड़ चाहता है जिससे नदियों में बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है, कई पहाड़ी क्षेत्रों में भूधंसावए दरारें आना, पहाड़ों का कटावए नदियों में बढ़ता अवैध खनन, चमोली में हाइड्रो पावर प्लान्ट के नाम पर ऋषिगंगा में 2016 में आई बाढ़ हो या जोशीमठ में एनटीपीसी के द्वारा बनाई जा रही टनल ही क्यों न हो। ऐसा लगता है मानो विभाग एक और बड़ी अनहोनी के इन्तजार में है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

विचार

पहाड़ की व्यथा-कथा पर सोचने की दरकार

रतन सिंह किरमोलिया

पहाड़ों की संरचना प्राकृतिक रूप से चुस्त दुरस्त रही है। भूकम्प जोन के बावजूद पहाड़ों की संपोषणीयता प्राकृतिक रूप से ठीकठाक रही है परन्तु ज्यों-ज्यों प्रकृति ने नए-नए आयाम स्पर्श करने शुरू किये, आधुनिक शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ, लोग पढ़ने लगे, मौकापरस्ती आरामतलबी और लालची लोगों की तादात बढ़ने लगी। ऐसे लोग पहाड़ की सम्वेदनशीलता से दूर कटते चले गये। पहाड़ों में धीरे-धीरे छेड़छाड़ बढ़ने लगी, विकास के कदम बढ़ने लगे। मनुष्य की लालची प्रवृत्ति से प्रकृति के साथ छेड़छाड़, खनन, दोहन बढ़ने लगा। फलस्वरूप पहाड़ों का कवच कमजोर होते चला गया। मिट्टी, पानी को रोकने वाले वृक्ष वनों का भी धीरे-धीरे ह्रास होने लगा। आज ऐसे वन दुर्लभ प्राय हो गए हैं।

आज विकास के नए आयामों को पंख क्या लगने शुरू हुए, गाँव-गाँव सड़कों से जुड़ने प्रारम्भ हो गए हैं। आज सड़क कटान के जिन तरीकों से धरती का कवच उधेड़ा जा रहा है, उससे पहाड़ों की सम्वेदनशीलता जमीन कमजोर पड़ती जा रही है। अनियमित एवं अत्यधिक बरसात इसमें आग में घी का काम कर रही है। अवैज्ञानिक तरीकों से खनन, दोहन, नदी घाटियों में विद्युत परियोजनाओं के निर्माण आदि से भी यहाँ के पहाड़ों की सम्वेदनशीलता बुरी तरह प्रभावित हो रही है। उसे इन पहाड़ी क्षेत्रों में बसे गांवों को खतरा उत्पन्न हो रहा है। कहीं-कहीं तो गांव धंसने प्रारम्भ हो गये हैं। जिसका खामियाजा पहाड़ के सीधे सादे वाशिंदे, जिनकी बदौलत पहाड़ों की रही सही अस्मिता बची हुई है, भगतने को विवश हो रहे हैं।

पहाड़ों की अति सम्वेदनशील संरचना का बिना वैज्ञानिक अध्ययन किए जहाँ तहाँ खनन करना, सड़कों के निर्माण के लिए शान्त एवं स्थित पहाड़ों को बेतरतीब ढंग से उधेड़ देना, बड़ी-बड़ी हिमालयी नदियों में बिजली उत्पादन के लिए बांध बनाना और सम्वेदनशील पहाड़ों के भीतर सुरंग बनाकर पूरी नदियों के पानी को उसमें उलट देना, ये सब यहां की शान्त वादियों, घाटियों में बसे गांवों को बर्बाद करने का जैसा उपक्रम है। इनके सारे दुष्प्रभावों का दुष्परिणाम तो यहां बसी आबादी को ही भुगतना पड़ेगा। कतिपय दुष्परिणाम सामने आ भी रहे हैं।

ऐसे निर्माण के लिये गहन वैज्ञानिक अध्ययन पश्चात ही स्वीकृति दी जानी चाहिये। ऊपर से सारा हिमालयी क्षेत्र भूकम्प की दृष्टि से जोन 5 में आंका गया है। इन हालात में यहां के पहाड़ों को ज्यादा छेड़ने से बचना होगा परन्तु विकास का लालच पहाड़कों को छेड़े बिना मानने को तैयार नहीं है। अब हमारी आराम तलबी इतनी बढ़ चुकी है कि हमें रसोईघर में पानी का नल चाहिये। आंगन में सड़क चाहिये। अच्छे स्कूल/कालेज एवं अस्पताल भले ही न हों। रोजगार तो पहाड़ों को बर्बाद करने में ही सृजित हो रहा है। अब कुछ लोग शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के नाम पर भले ही धीरे-धीरे पलायन कर रहे हों परन्तु फिर भी 80 फीसदी से अधिक आबादी आज भी पहाड़ में निवास करती है। उसकी यहाँ की खेती, पशुपालन, बागवानी एवं अन्य छोटे-मोटे धन्धों पर निर्भरता जिन्दा है।

अब उसे यहां सख्त से सख्त जरूरत यदि है तो वह है यहां की भौगोलिक पारिस्थितिकी, भूकम्प जोन, पर्यावरण, नदियों, घाटियों आदि को दृष्टिगत रखते हुए वैज्ञानिक सम्मत तरीके से विकास को नए आयाम देने की जरूरत है। इसके साथ ही यहां की स्कूली शिक्षा को कारगर करने और स्वास्थ्य सेवाओं को जनोपयोगी बनाने की भी जरूरत है। यद्यपि पहाड़ का जीवन बड़ा जीवट और जिजीविषा से परिपूर्ण होता है तो भी अब हर विकास खण्ड या तहसील स्तर पर मोबाइल अस्पतालों की जरूरत महसूस की जा रही है। जिसमें एक सर्जन, एक फिजीशियन एवं अन्य स्टाफ तैनात होने के साथ ही दवाएं होनी चाहिये। आपातकाल के लिए मण्डल स्तर पर हेली सेवा उपलब्ध होनी चाहिये।

यदि सरकार चाहती है तो कई अन्य आवश्यक खर्चों में कटौती करके इस तरह की सुविधाएं जुटाने पर विचार किया जा सकता है।

ज्योतिष की बातें - 140

24 अगस्त 2023 को बुध सिंह राशि में गोचर करते हुए वक्री हो जाएगा। 23 दिन बुध वक्री रहेगा। वक्री ग्रह का शुभाशुभ फल बढ़ जाता है। लेकिन अगले ही दिन 25 अगस्त 2023 को बुध अस्त भी हो जाएगा। 19 दिन बुध अस्त रहेगा। अस्त ग्रह का फल लगभग शून्य ही होता है। अतः बुध के शुभाशुभ फलों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होगा। वैसे भी बुध के वक्री और अस्त होने का फल अन्य ग्रहों के समान तीक्ष्ण प्रकृति का नहीं होता है।

23 अगस्त 2023 को सूर्य सायनमान से कन्या राशि में प्रवेश करेगा। वातावरण में शरद ऋतु का अनुभव होगा। जो लोग नियमित त्रिला का सेवन करते हैं उन्हें त्रिफला चूर्ण में थोड़ा चीनी मिलाकर सेवन करना चाहिए।

नागपंचमी- श्रावण शुक्लपक्ष की षष्ठीयुता पंचमी तिथि को नागपंचमी का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार सोमवार 21 अगस्त 2023 को नागपंचमी का पर्व मनाया जाएगा। श्रीमद्भागवत्पुराण के अनुसार इसी दिन ब्रह्मा जी ने नागों को यह वरदान दिया था कि जन्मेजय के नागयज्ञ में आस्तीक मुनि तुम्हारी रक्षा करेंगे और इसी दिन आस्तीक मुनि ने नागों की रक्षा की थी।

शुभं भवतु !! -**ओंकार नाथ कोष्टा**, ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 31

राज्य और जिला बनाने का खेल

वर्तमान में अपने देश में 29 राज्य और 797 जिले हैं । अभी भी दिनोंदिन जिलों की संख्या बढ़ती जा रही है। छोटे-छोटे राज्यों के निर्माण की यदा-कदा बात चलती रहती है। ऐसा कहा जाता है कि छोटे-छोटे राज्य बनने पर राज्यों का विकास तेजी से होता है। छोटे-छोटे जिले बनने पर प्रशासनिक सुविधा बढ़ जाती है और विकास की योजनाएँ संचालित करने में सुविधा होती है। विचारणीय बात है कि जो बहुत छोटे-छोटे राज्य हैं, क्या वहाँ की प्रजा वहाँ का विकास देखकर प्रसन्न है? क्या सभी मण्डलों को धीरे-धीरे राज्य में परिवर्तित कर देने पर प्रजा खुशहाल हो जाएगी?

मेरे विचार से राज्यों का निर्माण प्राकृतिक रूप से पहाड़ों और नदियों की सीमा रेखा के द्वारा स्वतः ही होता है। यह भ्रम है कि छोटे राज्यों का विकास तेजी से होता है बल्कि राज्य निर्माण से राज्यों के मध्य विभिन्न प्रकार के भेदभाव व विवाद ही उत्पन्न होते हैं। छोटे-छोटे राज्यों से मंत्रियों और विधायकों की संख्या बढ़ जाती है जिससे कि वहाँ की प्रजा को और अधिक लोगों का पोषण करना पड़ता है। नये नये जिले बनाने से जिलाधिकारी आदि प्रशासनिक अधिकारियों की संख्या बढ़ जाती है जिससे खर्च बढ़ता है, जनता पर टैक्स बढ़ता है, लेकिन जनता खुशहाल नहीं होती है । होना यह चाहिए कि जिला केन्द्र पर होने वाले जनता के सभी कार्य तहसील केन्द्रों पर ही सम्पन्न हों, आदि आदि । राजनीतिक स्वार्थ के लिए नए-नए राज्य और जिले बनाने का खेल बन्द होना चाहिए। - **सरल**

चम्पावत उप..

प्रथम पृष्ठ का शेष

लिये सबसे पहले रंजीत दास का भाजपा में शामिल होना है। कट्टर कांग्रेसी परिवेश से निकले रंजीत कह तो रहे हैं कि वह सीएम से प्रभावित होकर भाजपा में आए हैं लेकिन साफ दिखाई दे रहा है कि भाजपा की हवा और ऊपर से लेकर नीचे तक सारे गणित में अच्छे-अच्छे पाला बदल रहे हैं। चम्पावत उपचुनाव में भी यही सब हुआ था। पुष्कर धामी को बम्पर जीत करवाने के लक्ष्य में उनकी टीम जुटी थी और कांग्रेस के वार्ड मेम्बर से लेकर प्रधान, जिलापंचातय, नगर पंचायत नेता, संगठनों के नेता टूटकर लगातार भाजपा में जुड़ते चले गये। बागेश्वर में चम्पावत चुनाव जैसे बुरे हाल न हों, इसके लिये कांग्रेस के बड़े नेता जुटे हुए हैं। यह चुनाव बागेश्वर के आसपास सोमेश्वर, कपकोट विधान सभा तक असरकारी होगा। इसलिये वहाँ के नेता भी सक्रिय हैं।

लटुवाक् बोट

बाँजाणीका धार मा आहा
हरिया भरिया लटुवाक् बोट
झुपर्थालो मुर-मुर मायोला
बचाया, झन मारिया चोट।
चकला पात तैक कूं-कूं
भलो चार् घा चौपाइन हूं
बकली मिठि धिनालि हुँछि तै खवबेर
भौते फैदमंद हूं लट्टू, कूणि जाणनेर।
लगाओ लट्टू पालो जंगल
सुन्दर हो धरती माता होवै मंगल
हरी-हरी डान् खिलि जाओ
खूब धिनालि खाओ औरन् खिलाओ।

-**दीवान सिंह कठायत**

हरिया डांड्यूं

हरिया डांड्यू में कोछ घस्यारी
पालुरी घास विछ्यूंछ सारी
तली छ सरिता मनी छ वन
यसी शोभा देखी-देखी निश्वौंछ मन
रंग बिरंगी फूल फुलीरे चैत बहार
अहा रंगीलो फूल फुलीरे चैत बहार
अहा रंगीलो मुलुक हमर पहाड़
डाली-डाली पोथी-चरी झींगुर झंकार
सुर सुरीली गीत लय बाजीछ सितार।
मी छूं घस्यारी नाम विजुली रुम
हरी-भरी डांड्यों मा न्योली वासंछ छम
मील सोची छियो कार्टूल जुमर
तन मन सुध भुल दाथुली कमर
कफुवा घुघुती डांड्योंन झुरींछ
प्यॉली फुली रे, फुलि रे बुरांश
डाल-पात हरी हेरे वासनी साम
पहाड़ की ऋतु मा भूलि-भूलि फाम
बाजि-बाजि सितार वसन्त बहार
रंगीली-रंगीली हमार पहाड़।

-**देव सिंह बोरा**

पुरणी बाखयी चहल-पहल

गौक सिराण में इकले काफव बोट छ
जैक छुड़ा हांग फांग छन
जै में बहुतै चाड पोथ रूनी मिलजुली भ्येर
उसी कै, जैसे सबै रूंछी बाखयी में
एक दुसराक दगाड़।
साल में कभे अम्मा आण, बुबुक काथ
कभे जाग जागर चौरास लगाते रूनी।
जेठ, आषाढ़ फिर असोज कार्तिक ले आते रूंछी।
कोई गाड़ में हूंछी कोई खाव में कोई गाज्यो मांग में।
नानतिन सब काफवा बोट में हूंछि।
आमा बूबू की न्सक लगी रूंछि प्रांगण में।
ह्वाक तमाख, सगड़ सब दगड़ा हुंछी
ताल बाखायी, माल बाखयी नानतिन नक
बहुतै किलकार हैरूंछी।
ताल गाड़ माल गाड़ खूब चहल पहल हूंछी।
एक दिन योस आई, एक गाड़ बांज पड़ी
फिर दुसर पड़ी
देखते देखते पूरे सिराण बांज पड़ी गयो।
उसी कै जैसे पुरणी बाखयी छोड़ भ्येर
आमाक सबै नानतिन लहग्या।
एक देखी भ्येर दुसर गियो दुसर देख
भ्येर तीसर, देखते-देखते एक दिन सबै
अपुण अपुण बाखायी छोड़ भ्येर लहग्या।
लेकिन सिरान आज ले उती ला छ
काफव बोट ले अपुणी जाग मे छ
पर काफव सड़ी गियान।
ताल बाखायी, माल बाखयी ले अपुणी जाग मे छ।
धुरी पाथर छूटन बैगियान।
आम्म देखी भ्येर घुघुतील घोल लगून छोड़िहा
कुडाक भराण आप आमा बूबुक
कमर न्याति टयाड़ हैग्यान।
कुवाली बासन छोड़िहा घुघुतील घुरन छोड़िहा
आम्म आजी ले वी प्रांगण मई छ
एक आस में कि एक दिन आल
यो सिराण फिर हरियू भरियू होल।

-**राजपूत गोकुल मौरा**

स्मृति शेष : सुशील सिंह पांगती

खडकू ल्हासा परिवार के स्तम्भ थे

देहरादून। 12 अगस्त को दुखभरी सूचना मिली की मेहूवाला में सुशील पांगती जी का निधन हो चुका है। जोहार घाटी के खडकू ल्हासा परिवार की पुरानी पीढ़ी के स्तम्भ पांगती जी पिघलता हिमालय परिवार के वरिष्ठ सदस्य थे। पिघलता हिमालय परिवार स्व.पांगती जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

उनकी स्मृतियां प्रेरणा देती रहेंगी

मंजू पांगती

जीवन गतिमान है। जीवन के इस नाट्यमंच पर हर व्यक्ति अपने चरित्र को निभाते हुए एक दिन इह लोक को अलविदा कह अनन्त यात्रा पर निकल जाता है। 12 अगस्त 2023 की प्रभात वेला 6 बजकर 15 मिनट पर ससुर जी ने अपने निवास स्थान मेहूवाला में अपनी देह त्याग दी। मेरे चचिया ससुर सुशील पांगती का मेरे प्रति विशेष अनुराग था। पिछले एक साल से वे मुझे डीडीहाट आने के लिये कहते रहे, पर मेरा जाना नहीं हो सका। पिछले दो माह से वह बीमार चल रहे थे। वे स्वभाव से खुशमिजाज व अनुशासित दिनचर्या जिया करते थे। अपने पीछे वह एक बहू, दो नातितियां व एक नाती छोड़ गये हैं। दामाद पूर्व आईपीएस अधिकारी श्री गणेश मर्तोलिया जी हैं।

सन् 1963 में हमारे पूर्वज खड़क सिंह पांगती (खडकू ल्हासा) अपने भाईयों के साथ मुनस्यारी से डीडीहाट आ गये थे। हमारे पुरखों का अन्तिम किला आज ढह गया। प्रभु पुण्यात्मा को शान्ति प्रदान करे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

झील में नौका संचालन की मांग

लोहाघाट। कोलीढेक झील में नौका संचालन की मांग के लिए संचालकों ने वन क्षेत्राधिकारी दीप चन्द्र जोशी को ज्ञापन सौंपते हुए नौका संचालन में बाधक बनने वाले देवदार के पेड़ों को जल्द निस्तारण की मांग की है। रोहित ढेक के नेतृत्व में नौका संलाचकों ने कहा कि पहले सिंचाई विभाग ने झील की मरम्मत के लिए नौका संचालन में रोका था, अब डूब क्षेत्र में आने वाले देवदार के पेड़ों के निस्तारण के बाद ही नौका संचालन शुरु करवाने की बात कही है।

सप्तेश्वर पावर हाउस लीज पर होगा

चम्पावत। 90 के दशक में स्थापित लघु जल बिजली परियोजना सप्तेश्वर को अब लीज में देने की तैयारी है। 300 किलो वाट क्षमता के इस पावर हाउस को पीपीपी मोड से संचालित करने के लिये निदेशालय से टेंडर प्रक्रिया शुरु होगी। योजना के तहत क्षतिग्रस्त पावर हाउस ठीक किया जायेगा। बताते चलें कि देखरेख के अभाव में यह परियोजना बन्द पड़ी थी। कुछ समय उरेडा ने इसे संचालित किया था लेकिन आपदा में नहर क्षतिग्रस्त होने के बाद से कुछ नहीं हो सका।

पालिका आवासों के अवैध कब्जे हटेंगे

नैनीताल। नगर पालिका के आवासों में लम्बे समय से काबिज लोगों को नगर पालिका हटाने की क जूद कुछ लोग सरकारी आवास पर कब्जा किये हुए हैं।

नैनीताल माल रोड पर फिर से दरार

नैनीताल। शहर के माल रोड पर लगातार खतरा बड़ रहा है। सन् 2018 में लोअर माल रोड का 25 मीटर हिस्सा भूस्खतन के चलते क्षतिग्रस्त हुआ था और अब माल रोड में दस मीटर लम्बी दरार आ चुकी है। इसके स्थायी ट्रीटमेंट के लिये लोनिवि व अन्य विभाग मिलकर विचार कर रहे हैं। समय रहते इसका समाधान हो जाना चाहिये अन्यथा भारी नुकसान हो सकता है।

पन्तनगर किसान मेला ६ अक्टूबर से

पन्तनगर। पन्तनगर विश्वविद्यालय में किसान मेला सलाहकार समिति की बैठक कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह चौहान की अध्यक्षता में हुई। जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गा कि 114 वां अखिल भारतीय किसान मेला 6 से 9 अक्टूबर 2023 को विश्वविद्यालय में आयोजित किया जायेगा। बैठक में किसान मेले से सम्बन्धित कई बिन्दुओं जैसे किसान मेले में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के लिये समितियों का निर्धारण, मेले में किसान गोष्ठी के दौरान दिल्ली से आने वाले वैज्ञानिकों के व्याख्यान, प्रगतिशील किसान सम्मान इत्यादि पर विचार हुआ।

गंगोलीहाट, बेरीनाग, मुनस्यारी में आशा वर्करों की हड़ताल पर आश्वासन

अपनी मांगों को लेकर लम्बे समय से लामबन्द आशा वर्कर अब खुलकर विरोध में उतर चुकी हैं। सीमान्त क्षेत्र मुनस्यारी से लेकर गंगोलीहाट, बेरीनाग तक इनके द्वारा लगातार प्रदर्शन कर अपनी मांगों को दोहराया जा रहा है। आशा वर्कर की हड़ताल से कामकाज में दिक्कत भी होने लगी। हालातों को देखते हुए सीएमओ ने आशा वर्करों को आश्वासन दिया जिसके बाद फिलहाल हड़ताल को रोका गया है।

गंगोलीहाट के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र परिसर में उत्तराखण्ड आशा हेल्थ वर्कर यूनियन की ब्लाक अध्यक्ष उमा महरा के नेतृत्व में प्रदर्शन किया गया। अपनी दो सूत्रीय मांगों को लेकर बेरीनाग में यूनियन की अध्यक्ष सावित्री पन्त के नेतृत्व में धरना व बहिष्कार किया गया। इनका कहना है कि रोका गया नौ माह का वेतन आशाओं को मिले अन्यथा आन्दोलन जारी रहेगा। मुनस्यारी में भी आशाओं के कार्य बहिष्कार से ग्रामीण इलाकों से महिलाओं को दिक्कत का सामना करना पड़ा। गर्भावस्था में जांच से लेकर उनकी देखरेख का जिम्मा निभाने वाली आशा वर्करों की हड़ताल का असर अभी तक है।

जागेश्वर धाम कर्मियों का ड्रेस कोड

अल्मोड़ा। प्रसिद्ध जागेश्वर मन्दिर समिति ने अपने कर्मचारियों के लिये ड्रेस कोड जारी कर दिया है। ड्रेस कोड होने से मन्दिर समिति के कर्मचारी आने वाली हजारों की भीड़ में अलग से पहचाने जा सकेंगे। बाहर से आने वाले यात्रियों व पर्यटकों को भी सुविधा होगी कि वह अपनी बात या शिकायत इन कर्मियों से कर सकें। जागेश्वर धाम में इस समय वालंटियर सहित 22 कर्मचारी हैं।

धाम के प्रबन्धक ज्योत्सना पन्त ने बताया है कि मन्दिर समिति ने व्यवस्थाएं बनाए रखने के लिये लगातार बेहतर किया जा रहा है। इसी के तहत अब कर्मचारियों के लिए ड्रेस कोड लागू किया गया है। उन्होंने कहा कि जागेश्वर की महिमा के चलते कई बार अत्यधिक भीड़ हो जाने से पर्यटकों को दिक्कत का सामना करना पड़ता है। अराजक तत्व उन्हें गुमराह करते हैं। बाहर से आने वाले किसी भी यात्री व पर्यटक को दिक्कत न हो, इसी लिये ड्रेस कोड जरूरी हो गया था। कर्मचारियों को ड्यूटी के दौरान ट्रेक शूट और भगवा रंग की टी-शर्ट पहनना अनिवार्य होगा। इससे कर्मचारियों में अनुशासन बना रहेगा और मन्दिर के बारे में कोई भी जानकारी रहेगी।

भू कानून बनाने की मांग उठाई

नैनीताल। उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन कारी क्रान्तिकारी मोर्चा के बैनर तले राज्य आन्दोलनकारियों की बैठक में उत्तराखण्ड में भू कानून बनाकर इसे जल्द से लागू करने की मांग की। इसके अलावा सीएम को भेजे गये ज्ञापन में भी इस मांग को दोहराया गया है। संगठन के जिलाध्यक्ष गणेश बिष्ट ने कहा कि सख्त भू कानून, मूल निवास 1950, नैनीताल शहर की समस्याओं को लेकर संगठन कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट के निर्देश पर उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे स्थित व्यावसायियों पर हो रहे रहे अतिक्रमण की कार्यवाही को रोका जाए। जैसे-तैसे स्वरोजगार कर अपना पेट पालने वालों को अवसर दिया जाना चाहिये। बैठक में महेश जोशी, दीवान सिंह, हरेन्द्र बिष्ट, पान सिंह सिजवाली मौजूद थे।

तराई बरसात से तर, आफत शहर में

मूसलाधार बारिश से पूरी तराई तर हो चुकी है। इससे शहरों में जलभराव हुआ और लोग परेशान हैं। खटीमा में नदी नाले उफनाने से 16 परिवारों को शिफ्ट किया गया है। ग्राम दाह ढाकी में देवाह नदी उफनाने से 5 मकानों को नुकसान हुआ हुआ।

काशीपुर में कई कालोनियां जलमग्न हो गई। पर्वतीय क्षेत्र में निरन्तर हो रही बारिश से तुमड़िया डैम का जलस्तर बढ़ चुका है। मधुवन नगर, खलिक कालोनी, रहमतनगर, सरवरखेड़ा आदि गाँवों की डेढ़ सौ फिट तक भूमि पानी में समा गई। बाढ़ से दो दर्जन परिवार प्रभावित हैं।

सितारगंज में सूखी नदी व बैगुल के रौद्र रूप से शक्तिफार्म के कई गांव जल मग्न हो गए। सिंचाई विभाग की नहर की दीवार टूटने से पानी गांव में बहने लगा और 50 घरों में नुकसान हुआ है।

दिनेशपुर में हरीपुरा जलाशय से आए बाढ़ के पानी से तिलपुरी नं. 2 में रह रहे 24 परिवारों को नुकसान हुआ। इन्हें जंगल में तम्बू लगाकर रहना पड़ा है। बाजपुर में लेवरा नदी के उफनाने से मुख्य बाजार तक लबालब भरा।

हल्द्वानी में राक्षस्योव कर गये रकसिया और कलसिया नाले

हल्द्वानी। महानगर हल्द्वानी में कंक्रीट का जंगल तो बन चुका है लेकिन इसके फैलने और फैलाने वालों ने जितनी दुर्गति की उसका परिणाम भोगना पड़ रहा है। हल्द्वानी में बसने की चाह रखने वालों ने मोहल्ले खूब आबाद कर दिये लेकिन पीने के पानी का हाहाकार है और घर की गन्दगी-सीवर नहर-नालों में जाकर अटके हैं। ऊपर से नालों के आसपास घनी बस्तियां बनती जा रही हैं। प्रकृति अपना रास्ता कब खोलने लगे किसी को पता नहीं। ऐसा ही इस बार हल्द्वानी के रकसिया और कलसिया नाले ने किया। अनुमान है मूसलाधार बारिश और नालों के उफनाने से करीब लाखों का नुकसान हो गया। प्रशासन ने शहर व आसपास के क्षेत्र में जो आंकलन किया है उसके अनुसार सौ करोड़ का नुकसान हो चुका है। इसमें हल्द्वानी, कालाढूंगी, चोरगलिया क्षेत्र है। रकसिया और कलसिया से नई बस्ती, देवलढूंगा, कोठगोदाम के अन्य इलाकों में चार दर्जन भवनों को नुकसान पहुँचा है।

जैसा की नाम से ही लग रहा है- रकसिया और कलसिया। राक्षस की तरह कलबलाते हुए यह नाले बहा करते होंगे लेकिन समय के साथ भाबर में जैसे-तैसे पैर पसारने वालों ने अपने रहने का ठिकाना इसके आस-पास भी कर लिया। नाले तो हर बार उफनाते थे लेकिन इस बार आठ अगस्त को यह भयंकर बन चुके थे। रसकिया नाले से दमुवाढूंगा क्षेत्र के कुमाऊं कालोनी, मित्रपुरम्, गोकुल नगर, जवाहर ज्योति नगर नवाड़ बिठौरिया नं. 2 सहित कई कौलोनियों को बेचैन कर दिया। उफान के कारण दो मकान ध्वस्त हो गये और 42 से अधिक क्षतिग्रस्त हुए। इसी तरह कलसिया नाले ने देवलढूंगा में कहर बरपाया। रात भर भयंकर बनकर नाला बस्ती में आ गया और घरों में नुकसान होने लगा। इस आपदा में कई परिवार बुरी तरह टूट चुके हैं।

कांडे कमस्यार में घरों तक पानी रिसा

बागेश्वर। काण्डे कमस्यार में घरों तक पानी रिसने से लोग भयभीत हैं। असल में अवैध खड़िया खनन के कारण पूरे क्षेत्र में असर हुआ है। खड़िया खान से प्रभावित तुलसी देवी पत्नी नन्दन राम अपने परिवार के साथ अन्यत्र जा चुकी है। प्रभावितों ने शासन-प्रशासन से राहत की मांग करने के साथ ही न्याय के लिये मन्दिर में गुहार लगाई है।

नन्दादेवी मेले और रामलीला की तैयारी

नैनीताल। श्रीराम सेवक सभा की ओर से नन्दादेवी मेले की तैयारी शुरु हो चुकी है। साथ ही शारदीय नवरात्र में होने वाली रामलीला की तालीम जारी है। नन्दादेवी मेले आयोजन को लेकर संस्था के पदाधिकारियों ने कलक्ट्रेट में प्रशासनिक अधिकारियों से सहयोग से सम्बन्धित ज्ञापन भी सौंपा। इसमें राम सेवक सभा के अध्यक्ष मनोज साह, महासचिव जगदीश बवाड़ी, विमल चौधरी, भुवन बिष्ट प्रमुख थे।

परिक्रमा

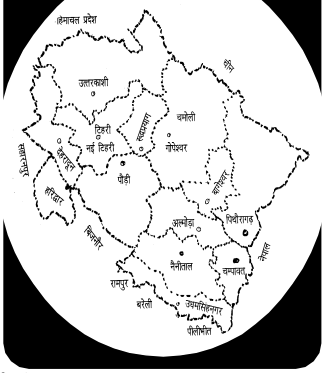

रेलवे स्टेशन की पटरियां शिफ्ट होंगी

हल्द्वानी। अतिवृष्टि और गोला नदी के उफान के कारण हल्द्वानी रेलवे स्टेशन के ट्रैक नम्बर-3 को बचाने के लिये किये गये प्रयास असफल हुए हैं। ऐसे में रेलवे ट्रैक-3 की पटरियों को लोहे के खम्बों के साथ बांध दिया गया है और रेलवे के तकनीकी विशेषज्ञों का कहना है कि अतिक्रमण क्षेत्र यानी रेलवे की जिस भूमि पर अतिक्रमण हुआ है वहां शिफ्ट करना होगा। इसके लिये तकनीकी विशेषज्ञों की रिपोर्ट के आधार पर रेलवे लाइन शिफ्ट होंगी।

डीएम ने लगाई लताड़

हल्द्वानी। शहर व आसपास नाली-नाले गूल-नहरों में भरे कचरे को देख डीएम ने नगर निगम के अधिकारियों कर्मियों को लताड़ कि बराबर साफ-सफाई होती तो कचरा भरकर मोहल्लों में पानी न उफनता। बर्बादी के बाद शहर व आसपास टीम ने सफाई अभियान चलाया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क– 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hayat Paradise
Bus Station Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

स्वतंत्रता दिवस व घी त्यार की बधाई–
राजू गाइड
दरकोट मुनस्यारी
राजेन्द्र सिंह मर्तोलिया

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी द्वारा किये गये कार्यों को बताने एवं ऐतिहासिक धरोहरों को संरक्षित करने के लिये धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धक समिति के महा अभियाना पर जुड़ने की अपील के साथ-

फली सिंह दताल-श्रीमती शान्ता गर्ब्याल दताल

जसुली शौक्याणी सोसाइटी रजिस्टर्ड

बागेश्वर। जसुली बूढ़ी लला शौक्याणी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धक समिति का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। दाननवीरांगना जसुली के कार्यों को नई पीढ़ी को बताने और उनकी धरोहरों को संरक्षित करने की दिशा में चल रहे कार्यों के क्रम में संस्था पंजीकरण के अलावा धरमघर में इसका कार्यालय खोला गया है। उल्लेखनीय है कि दारमा घाटी की महान दानवीरांगना जसुली बूढ़ी ने अपने समय में यात्रियों के लिये जगह-जगह धर्मशालाओं का निर्माण करवाने का पुनीत कार्य किया। समय के साथ इन प्राचीन धरोहरों को विसरा दिया गया, इन पर कब्जे होने लगे, इन्हें बर्बाद किया गया। कैलाश मानसरोवर यात्रा मार्ग तक सैकड़ों धर्मशालाओं को बनवाने वाली अमा जसुली की यादों को और अपनी धरोहरों को बचाने की दिशा में महान कार्य श्रीमान अशोक गर्ब्याल व साथियों ने वर्षों पहले पिथौरागढ़ में किया था। इसके अलावा श्रीमान रवि पतियाल व साथियों द्वारा भीमताल में इस विषय पर चिन्तन के साथ ही कार्य को बढ़ाया गया। यह कार्य बिना आवाज के आगे बढ़ना आसान नहीं था इसके लिये पिघलता हिमालय ने बकायदा प्रतिवर्ष बढ़े आयोजन करते हुए विद्वतजनों को आमंत्रित किया और इस परम्परा से जुड़े लोगों को लामबन्द करने का कार्य किया है। अब जबकि इस कार्य के लिये संस्था का पंजीकरण कार्य हो चुका है, सीमान्तवासी सहित सभी उत्साहित हैं। संस्था के अध्यक्ष फली सिंह दत्ताल ने सभी से इस पुनीत कार्य में आगे आने का आह्वान किया है। उपाध्यक्ष गंगा सिंह पांगती ने कहा है कि लला जसुली की विरासत को संरक्षित करना पुनीत कार्य है।

सप्ताह के पर्व

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

21 अगस्त- नाग पंचमी
23 अगस्त- तुलसीदास जयन्ती
27 अगस्त- एकादशी
28 अगस्त- प्रदोष

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती

फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website-
www.pighaltahimalay.com

पत्र व्यवहार के लिये पते-

जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)